

ICAR-CSSRI organized a World Soil Day campaign at Village Pundrak, Karnal on 5th December 2023

ICAR-Central Soil Salinity Research Institute (CSSRI), Karnal organized a World Soil Day campaign at Village Pundrak, Karnal with aims to connect the people with soils and raise awareness on their critical importance in the human life and to restore and preserve the soil health. The campaign was organized by a team of four scientist namely Dr. R. K. Fagodiya, Dr. Kailash Prajapat, Dr. Parul Sundha, and Priyanka Chandra of CSSRI. Campaign was organized with about the 40 female farmers of the Pundrak village, and with about 50 School Children of Govt. Senior Secondary School, Pundrak. At the outset of the programme, Dr. Kailsh Prajapat briefed the farmers and school children about the about the World Soil Day and soil health. He said that the theme of the World Soil Day 2023 is “Soil and Water: A Source of Life” which state the importance of both soil and water as source of life. Dr. Parul Sundha explained about the various organic amendments such as farm yard manure, compost, municipal solid waste compost etc. and their importance in soil health management. She explained the detail procedure of compost preparation. Dr, Priyanka Chandra, discussed about the soil biological health and water management. Dr. R. K. Fagodiya explained about the importance of Santulit Poshak Tatv in crop production and soil health management. He also briefed the student about the Agricultural Education and job opportunities in agricultural sector. Shri Mohan Singh Rana, Principal, Govt. Sr. Sec. School, Pundrak, and other teachers namely Ishwar Singh and Sunita Malik were also present.

Glimpse of World Soil Day Campaign Organized by ICAR-CSSRI at Pundrak Village



Female Farmers of Village Pundrak participated in the World Soil Day Campaign



Students of Govt. Senior Secondary School, Pundrak, Karnal attended World Soil Day Campaign

हरियाणा

दैनिक भास्कर, कर्नाल, मंगलवार, 5 दिसंबर, 2023

मृदा दिवस आज • वैज्ञानिक देशभर में कर रहे हैं शोध, किसानों को खेतों में जाकर दिया जा रहा है प्रशिक्षण सीएसएसआरआई के वैज्ञानिकों ने देश में 10 लाख हेक्टर भूमि का किया सुधार, 37.7 लाख हेक्टर पर चल रहा है काम

महकम नुजुम | कर्नाल

इन राशियों में ज्यादा क्षारीय भूमि

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, छत्तागढ़, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में ज्यादा क्षारीय भूमि मिलती है। क्षारीय (उच्च) भूमि में पुनर्जातीय मृदा की मात्रा कम या पीछा प्रायः 8.5 से अधिक या चिकित्सकीय सोडियम (डीएसपी) 15 प्रतिशत से अधिक होता है। मृदा क्षारीय, सोडियम, कार्बोनेट और यकार्बोनेट क्षारीय उपग्रह को संश्लेषित करते हैं, क्योंकि वे मिट्टी की संरचना और गहरी तहों को स्थिरता प्रदान करते हैं।

प्रशिक्षण प्रशिक्षण को दैनिकीयक उपग्रहों का चरण है। ऐसे विज्ञान केंद्रों में मृदा लक्षण अनुसंधान संस्थान कर्नाल में संर्भर कर सकते हैं।

अनर्क, सुपलीकृत माइक्रोहाना, औद्योगिक अद्विष्ट परामर्शक, फसल विनाशक, फसल विनाशक, फसल विनाशक (एकजीडीसी) आदि के उपयोग से क्षारीय प्रकृत विषय पर शोध कार्य किया जा रहा है।

मृदा क्षारीयता को कम करते हुए धान-गेहूँ के उत्पादन को करीब दो गुणा तक बढ़ा सकते हैं: आरके यादव

केंद्रीय मृदा लक्षण अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई) के निदेशक डॉ. आरके यादव ने बताया कि मृदा सुधार तकनीकों को किसानों के खेतों में जाकर उन्हें सीखाना दिया जा रहा है। मृदा पर फसल प्रकृत विनाश के अनुसार उन्हें धान-गेहूँ के उत्पादन के लिए देना के विश्व क्षारीय क्षेत्रों में लगाए प्रयोगों के परिणामों में यहाँ कि 50 प्रतिशत विनाश आधुनिक के प्रयोग और इसी आधुनिकता के अनुसार अन्य सूक्ष्म अम्लिक तैलिक तैलिक प्रयोग, एकाजीडीसी और यकार्बोनेट आदि के उपयोग से मृदा क्षारीयता को कम करते हुए धान-गेहूँ के उत्पादन को करीब दो गुणा तक बढ़ाया जा सकता है। इसके साथ ही मृदा के भौतिक एवं रासायनिक गुणों में भी तेजी से सुधार सुधार संभव है। केंद्रीय मृदा लक्षण अनुसंधान संस्थान द्वारा विज्ञानियों की एक टीम-विज्ञानियों पर होने वाले खेतों को कम करने के लिए 'जल-सुरक्षा' शोध-परिणाम विज्ञान जा रहे हैं, जिसमें सामूहिक और अर्धकृषि के अनुसार विज्ञान अपनी क्षारीय भूमि को अपनी से सुधार संभव है।

अमर उजाला

मंगलवार 05.12.2023

मनवरीय क्षारीय भूमि सुधार नहीं जाय तो बज जायगी 21 लाख टन अतिरिक्त खाद्यान्न पैदावार

निमन गुणवत्ता वाले जल से खराब हो रही मिट्टी की सेहत

क्षारीयता एक पर्यावरणीय खतरनाक है

आज, आज राशियों में क्षारीय और क्षारीय प्रकृत भूमि को निरास करने में काम कर रहे हैं। फसल के लिए जल स्रोत में काम कर रहे हैं। फसल के लिए जल स्रोत में काम कर रहे हैं। फसल के लिए जल स्रोत में काम कर रहे हैं।

मिट्टी एवं पानी जीवन का आधार, इस बारे में धीम

इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि मिट्टी और पानी जीवन का आधार हैं। मिट्टी और पानी जीवन का आधार हैं। मिट्टी और पानी जीवन का आधार हैं।

बीमार खेत कैसे भरेंगे पेट

60 बीमार भूमि क्षेत्र में 15 दिन में अधिक खाद्यान्न से शोध पर काम

केंद्रीय मृदा लक्षण अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई) के निदेशक डॉ. आरके यादव ने बताया कि मृदा सुधार तकनीकों को किसानों के खेतों में जाकर उन्हें सीखाना दिया जा रहा है। मृदा पर फसल प्रकृत विनाश के अनुसार उन्हें धान-गेहूँ के उत्पादन के लिए देना के विश्व क्षारीय क्षेत्रों में लगाए प्रयोगों के परिणामों में यहाँ कि 50 प्रतिशत विनाश आधुनिक के प्रयोग और इसी आधुनिकता के अनुसार अन्य सूक्ष्म अम्लिक तैलिक तैलिक प्रयोग, एकाजीडीसी और यकार्बोनेट आदि के उपयोग से मृदा क्षारीयता को कम करते हुए धान-गेहूँ के उत्पादन को करीब दो गुणा तक बढ़ाया जा सकता है। इसके साथ ही मृदा के भौतिक एवं रासायनिक गुणों में भी तेजी से सुधार सुधार संभव है। केंद्रीय मृदा लक्षण अनुसंधान संस्थान द्वारा विज्ञानियों की एक टीम-विज्ञानियों पर होने वाले खेतों को कम करने के लिए 'जल-सुरक्षा' शोध-परिणाम विज्ञान जा रहे हैं, जिसमें सामूहिक और अर्धकृषि के अनुसार विज्ञान अपनी क्षारीय भूमि को अपनी से सुधार संभव है।

गोबर की खाद और कम्पोस्ट खाद के महत्व के बारे में महिलाओं को बताया

सीएसएसआरआई ने पुंडरक में विश्व मृदा दिवस मनाया

कनकल, महिला विज्ञान और छात्रों को मिट्टी की जानकारी देते हुए।

महकम नुजुम कर्नाल

केंद्रीय मृदा लक्षण अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई) ने पुंडरक में विश्व मृदा दिवस मनाया। इसमें गाँव की 40 महिला किसानों और राजेश्वरी वर्मा डॉ. आर. के. कर्नाल प्रजापति ने कहा कि विश्व मृदा दिवस का विषय मिट्टी और पानी जीवन का आधार है, जो जीवन के खेत के रूप में मिट्टी और पानी दोनों के महत्व को बताता है। डॉ. आरके यादव ने विभिन्न जीवन विदेशक डॉ. आरके यादव केन्द्र के।